



प्रदूषण : एक समस्या



आज सारी दुनिया के सामने प्रदूषण की विकट समस्या खड़ी है। प्रदूषण का अर्थ है मलिनता अथवा गंदगी। प्रदूषण चार प्रकार से होता है- जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, तथा ध्वनि प्रदूषण।

विश्व की विशाल और तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या की उदरपूर्ति के लिए विपुल मात्रा में अनाजों, दालों, साग-सब्जीयों फलों आदि का उत्पादन करना पड़ता है। इसके लिए खेतों में रासायनिक उर्वरकों, कीटकनाशकों आदि का भारी मात्रा में उपयोग करना जरूरी हो जाता है। इनके अत्यधिक उपयोग के कारण उपजाऊ धरती धीरे-धीरे अनुपजाऊ और बेजर बनती जा रही है। इस विशाल जनसंख्या की जरूरतें मकान, इंधन आदि पूरी करने के लिए जंगलों का व्यापक रूप से विनाश किया जा रहा है।

कारखानों की चिमनियों से निकलने वाले धुएँ की जहरीली गैसों के कारण वायुमंडल प्रदूषित होता जा रहा है। दुनिया भर में स्थापित २०० से अधिक अणु उर्जा कैटु वायु मंडल में लगातार रेडियो-सक्रिय किरणें छोड़ रहे हैं। इससे वातावरण प्रदूषित होता है। नगरों में इकट्ठा होनेवाला कुड़ा-कचरा पास की नदियों, झीलों अथवा समुद्रों में बहा दिया जाता है। बड़े-बड़े कारखानों से भारी मात्रा में निकलने वाले जहरीले रसायनों से भरपूर गंदा पानी तथा शहरों के नाले-नलियों का गंदा पानी पास की नदी, झील या सागर में छोड़ दिया जाता है। कपड़े धोने, पशुओं को नहलाने, शव

आदि बहाने से भी नदियों झीलों, तालाबों आदि का जल प्रदूषित हो जाता है

वनों की अंधाधुंध कटाई से प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया है तथा मौसम अनिश्चित बन गया है। वर्षा की मात्रा में कमी आ गई है। जल प्रदूषण के कारण जलीय वनस्पतियाँ, नदियों, झीलों तथा सागरों के जीव जंतु बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। आज बहुत बड़ी संख्या में लोग पेट के घातक रोगों से पीड़ित हैं। जहरीली गैसों तथा रेडियोसक्रिय किरणों द्वारा होनेवाले वायु-प्रदूषण से बड़ी संख्या में लोग कैंसर, हृदयरोग, मानसिक तणाव आदि के शिकार हो रहे हैं। ध्वनि प्रदूषण से लोगों में चिड़चिड़ापन, सिरदर्द, मानसिक तणाव, उच्च रक्तदाब आदि रोग फैल रहे हैं।

प्रदूषण कम करने अथवा रोकने का सबसे प्रभावकारी उपाय जनसंख्या-वृद्धि पर अंकुश लगाना है। इसके अलावा हमें अधिक संख्या में वृक्ष लगाने चाहिए। कारखानों की चिमनियाँ पर्याप्त उँची बनाने के लिए उद्योगपतियों को बाध्य करना चाहिए।

रासायनिक उर्वरकों तथा कीटकनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग को नियंत्रित करना चाहिए। इसके साथ-साथ लोगों के बढ़ते खतरों के बारे में जानकारी देकर उन्हें सचेत भी करना चाहिए।

- कु. सोनाली चव्हाण
द्वितीय वर्ष कला





काव्य विभाग

हम हैं रखवाले धरती के

हम हैं रखवाले धरती के,
मिलकर करेंगे रखवाली ।
फैलाएंगे हरियाली और
रहने न देंगे जगह खाली ।

तोड़ने न देंगे कोई पेड़,
न होगा कोई शिकार ।
पर्यावरण रक्षक होगा,
हर एक हमारा सहकारी ।

प्लास्टिक हो या थर्माकोलें,
कभी न करेंगे इनका उपयोग ।
धरती को समृद्ध रखने में,
देंगे हम सहयोग ।

हर एक वस्तु का करेंगे,
प्रकृतिनुरूप इस्तेमाल ।
न पहुँचाकर धरती को दुख,
होंगे हम माला माल ।

निसर्ग ही हमारा साथी,
वही हमारी सहेली ।
फैलाएंगे हरियाली और
रहने न देंगे जगह खाली ।

हम हैं रखवाले धरती के,
मिलकर करेंगे रखवाली ।
मिलकर करेंगे रखवाली ।

- विठोबा घाडी उर्फ उमेश
द्वितीय वर्ष कला

“स्वावलंबी शिक्षण हेच आमचे ब्रीद.”

- कर्मवीर भाऊराव पाटील

यह सब कलम से

जब कलम ने चोट मारी,
तब खुली वह खोट सारी,
तब लगे तुम वार करने,
झूठ से संहार करने ।

सोचते हो मान दोगे,
जुल्म के आघात दोगे,
सत्य का सिर काट लोगे,
रक्त जीवन चाट लोगे ।

भूल जाओ यह न होगा,
जो हुआ है वह न होगा,
लेखनी से वार होगा,
वार से ही प्यार होगा ।

कल नगर गर्जन करेगा,
क्रोध विष वर्षन करेगा,
सत्य से परदा फटेगा,
झूठ का तब सिर कटेगा

संकलक

कु. तृप्ती बाबरदेसाई
(द्वितीय वर्ष कला)

“विद्येविना मति गेली ; मतीविना नीति
गेली ; नीतिविना गति गेली ; गतिविना वित्त
गेले, वित्ताविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ
एका अविद्येने केले.”

- महात्मा फुले





पर्यावरण बचाओ

पर्यावरण को बचाना हमारा ध्येय हो,
सबसे पास इसके लिए समय हो ।

पर्यावरण अगर नहीं रहेगा सुरक्षित,
हो जाएगा सब कुछ दूषित ।

भले ही आप पेड लगाए एक,
पूरी तरह करे उसकी देखरेख ।

सौर ऊर्जा का करे सब उपयोग,
कम करे ताप विद्युत का उपभोग,

रासायनिक खाद का कम करे छिडकाव,
भूमि को प्रदूषित होने को बचाव ।

कचरों का समुचित रीति से करो निपटारा,
फिर न होगी कोई नदी प्रदूषण का मारा ।

फैक्ट्रियों में जब सौर यंत्र लगाई जाएगी,
वायू प्रदूषण में अपने आप कमी आएगी ।

तब जाकर पर्यावरण प्रदूषण में कमी आएगी,
आधी बीमारियाँ अपने आप चली जाएगी ।

संकलक
कु. सोनाली चव्हाण
(द्वितीय वर्ष कला)



प्रदूषण

बड़ी बड़ी चिमनियों से निकलता ये धुआँ,
है इन्सानों की जिंदगी के लिए एक जुआ ।

धूल उडाती बड़ी गाडियाँ,
फेफडे के लिए हैं बीमारियाँ ।

प्रदूषण तो तेजी से बढ़ रहा है,
नई नई बीमारियाँ पैदा कर रहा है,
वाहनों की संख्या तेज रफ्तार से बढ़ रही है,
लोगों की मौत की नई परिभाषा गढ़ रही है ।

पेड रहे हैं तेजी से कट, प्रदूषण बढ़ रहा लगातार,
फैक्ट्रियाँ जो खुल रही कई हजार
परमाणु उर्जा पे हो रहे हम निर्भर,
विकिरण के साथ जीना हो रहा दुर्भर ।

नित नए हो रहे अविष्कार,
ध्वनि प्रदूषण बढ़ रहा लगातार ।
फैक्ट्रियों से छोड़े जा रहे अवशिष्ट,
मिट्टी खो रही अपनी गुण विशिष्ट ।

कचरा नदियों में डाला जा रहा,
जल प्रदूषण फैला रहा ।
रोकना है अगर प्रदूषण बढ़ने की गति,
तो उपयोग में लाना होगा अपनी मति ।

सीमित रखो अपना उपयोग,
मत करो संसाधनों का दुरुपयोग ।
मत करो संसाधनों का दुरुपयोग ।

संकलक
कु. निकिता दळवी
(द्वितीय वर्ष कला)





धरती माता की सुंदरता

धरती माता हमारी है,
माता को प्रणाम करो ।
बनी रहे इसकी सुंदरता,
ऐसा भी कुछ काम करो ।
आओ हम सब मिल-जुलकर,
इस धरती को स्वर्ग बना दें ।
देकर सुंदर रूप धरा को,
कुरुपता को दूर भगा दे ।
नैतिक जिम्मेदारी समझकर,
नैतिकता से काम करें ।
गंदगी फैला भूमि पर,
माँ को न बदनाम करें ।
जन्म भूमि है पावन भूमि,
बन जाए इसके संरक्षक ।
माँ तो है हम सबकी रक्षक,
हम इसके क्यों बन रहे हैं भक्षक ।

कुदरत ने जो दिया धरा को,
उसका सब सन्मान करो ।
न छोड़ो इस उपहारों को,
न कोई बुराई का काम करो ।

धरती हमारी माता है,
माता को प्रमाण करो ।

कु. कलावती सुतार
द्वितीय वर्ष विज्ञान



कट गए पेड

परदेसिन भई छाँव रे

कट गए पेड परदेसिन भई छाँव रे,
फैल गए नगर सिमिट गए सब गाँव रे ।
जानी ना मानुख ने,
मौसम की पीड भाई,
पंछी बनाए तो बनाए,
कहाँ अब नीड भाई,
फिरता है कागा भी ढूँडता छाँव रे,
कट गए पेड परदेसिन भई छाँव रे,
फैल गए नगर सिमिट गए सब गाँव रे ।
अब महके ना चंपा,
ना बेला हैं ना फुलें,
सावन के वे झूले,
भैया हम सब भूले,
शेष बचा है बस आखिरी इक दाँव रे,
पेड लगाओ भैया, पेड लगाओ रे,
फैल गए नगर भैया, सिमिट गए सब गाँव रे ।

संकलक- कु. मृणाली बेळेकर
द्वितीय वर्ष वाणिज्य

पेड लगाओ

पेड लगाओ, पेड लगाओ,
हराभरा जीवन बनाओ ।
छाया ये हमको देते हैं,
फल ये हमको देते हैं ।
बाढ से हमको बचाते हैं,
प्रदूषण दूर हटाते हैं ।
हम भी पेड लगाएँगे,
संसार को हराभरा बनाएँगे ।

संकलक
कु. मयुर सावंत (द्वितीय वर्ष कला)





हरियाली-मतवाली

आओ सब मिलकर वातावरण को बचाए,
रोके वह संकट जो हमारी विरासत को निगल जाए।

चिड़िया मुझे हँसाए रे,
बरखा मुझे भाए रे,
जग हरा भरा हो जाए रे,
आओ कुदरत को बचाए रे।

ओ बरखा रानी आजा,
उदास खेत तेरी राह देखे,
आ इन्हें हरा भरा बना जा,
आ इन्हें हरा भरा बना जा,



संकलक
कु. नमिता काडगे
द्वितीय वर्ष वाणिज्य

छोटी सी आशा

न पीता हूँ, न पिलाता हूँ।
कुदरत का दीवाना मैं, उससे ही नशा पाता हूँ।
काटूँ न पेड़ कभी, हो नए जरूर लगाता हूँ।
करवा के आझाद पंछियों को, बड़ा ही सुकुन पाता हूँ।
हिंसक स्वाद के खातिर, न मासूमों को बली बनाता हूँ,
जल है जीवन का आधार, उसे हर संभव बचाता हूँ।
पर्यावरण के बैरी प्लास्टिक से, चलिए मेरे नक्शे कदम पे,
बस यही मैं चाहता हूँ, बस यही मैं चाहता हूँ।

संकलक
कु. प्रियांका बेळेकर
(द्वितीय वर्ष वाणिज्य)

पर्यावरण को बचाना है

आओ आज कतारो पे,
रोपे वृक्ष हजारों में,
श्रम का बिगुल बजाना है,
पर्यावरण को बचाना है।



वन परिवेश न घटने दें,
इक भी पेड़ न कटने दें,
पड़े सभी अनमोल रतन,
आओ इसका करे जतन।

पेड़ों की हर डाली में,
प्यार की हरियाली में,
कहता यही जमाना है,
पर्यावरण को बचाना है।

संकलक
कु. प्रियांका बेळेकर (द्वितीय वर्ष वाणिज्य)



महत्व पानी का

पानी तो अनमोल है, उसको बचा के रखिए।
बर्बाद मत कीजिए, इससे जीने का सलिका सिखिए।
पानी को तरसते हैं, धरती पे काफी लोग यहाँ।
पानी ही तो दौलत है, पानी सा धन भला कहाँ।
पानी की है मात्रा सीमित, पीने का तो और सीमित।
तो पानी को बचाइए, इसी में है समृद्धि निहित।
शेविंग या कार धुलाई, या जब करते हो स्नान।
पानी की जरूर बचत करें, पानी से है धरती महान।

संकलक
कु. उज्वला रावराणे
(द्वितीय वर्ष वाणिज्य)





मत काटो मेरे हाथ

वत्स! वृक्ष मेरे हाथ हैं मत काटो इन्हें
जिन्हें फैलाकर बादलों से पानी माँगती रही
सदियों से तुम्हारे लिए ।

मुझे नहीं चाहिए ग्रीष्म में छाँव,
शीत में ओढ़ना, बारिश में छाता ।

सदियों से पीठ पर बोझ लादे हुए हूँ और
तूम हो जो मेरे हाथ काट रहे हो ।
वत्स! मत काटो मेरे हाथ जो ताजी हवा
ताजी फल-जड़ी-बूटी और जीवन देते रहे तुम्हें ।

कट जाएंगे यदि मेरे हाथ
उस दिन न पानी मिलेगा, न अनाज
तडप-तडपकर मरते हुए तूम्हे
देख नहीं पाउँगी ।

वत्स! अपनी जीवन डोर मत काटो अपनी हाथों से
मैं तुम्हें मरता हूँ नहीं देखना चाहती
तूम्हें दुनिया के सबसे उपर देखना चाहती हूँ ।
वत्स! मत काटो ये जंगल, मत काटो ये हाथ ।

संकलक :
कु. मीना पोवार
तृतीय वर्ष कला



कुदरत

न किसी फरमान, न एहसान की मोहताज,
कुदरत तो खुद खजानों से सजा ताज होती है ।
आदिकाल से ले अबतक, लगे सुलझाने जिंदगी,
गुत्थियाँ कई हैं, उलझी हुई वो राज होती है ।
तय किया इसने अपनी रहमतों ने मतों का,
अनुशासन की धुन से सजा साज होती है ।
कभी नाज होती है, कभी हमराज होती है ।

चिरहरण करते हम जब इसका प्रदूषण बन जाता है,
सैलाब, चल जला, स्तुनामी बन नाराज होती है ।
चहकते बड़े पशु-पक्षी, महकते बेल-बूटे बहुत होते हैं,
सावन, बसंत बन, जब आगाज होती है,
शर्मिला बडी ओढ़े हुए, ओजोन की चुनरी,
न छेडो खिंचो चुनरी वही इसकी लाज होती है ।

संकलक
कु. अशोक पाटील
(प्रथम वर्ष कला)





पर्यावरण की रक्षा

ये मानव, बन गया तू दानव,
थोडासा कर विचार ।
कर रक्षा जंगल और जल की,
इससे बड़ा न कोई उपकार ।

एक समय था इस धरती पर,
था जंगल ही जंगल ।
हरियाली थी चारण,
और नाचे मोर मंगल ।

कल- कल बहती नदियाँ,
पहनी सफेद लिबास ।
शुद्ध जल और शुद्ध वायु,
इस धरती पर वास ।

जंगल काटा धरती का,
खुदगर्जी की टहनी पार कर ।
जल को तूने किया बर्बाद,
धरती का सीना चीरकर ।

जल वायु को दूषित करके,
समझे तू खूद को सयाना ।
जल्द ही वो दिन आएगा,
तुझे पड़ेगा पछताना ।

अब बन समझदार,
उठ हो तैयार ।
संभाल ले तू अपना होश,
बचा ले धरती माँ की गोद ।

- संकलक

कु. गीतांजली चव्हाण
प्रथम वर्ष कला

पर्यावरण हमारा मित्र

पर्यावरण हमेशा रहा है हमारा मित्र,
पर हमने बिगाड़ दिया है उसका चित्र ।

पर्यावरण ने मनुष्य को दिया प्राकृतिक संपदा का उपहार,
पर बदले में मनुष्य ने पर्यावरण पर किया अत्याचार ।
मनुष्य ने अपने स्वार्थ में पर्यावरण की धरोहर का किया तिरस्कार,
इसकी वजह से आज मनुष्य खुद हो रहा है बेबस और लाचार ।
पर्यावरण ने हमें दिया नदियों, झरनों, झीलों का शुद्ध पानी,
पर हमने उसको प्रदूषित करके कर डाली अपनी ही हानी ।
नदियों को नाला बना दिया, भूमिगत जल को सुखा दिया,
मनुष्य के अंधे स्वार्थ ने उसे पीने के शुद्ध पानी को भी तरसा दिया ।
पर्यावरण के आभूषण-पेड़ों, वनों, जंगलों को काट दिया गया,
साँस लेने के लिए मिली हवा को भी जहरीला बना दिया गया ।

प्राकृतिक संसाधनों का अनुचित दोहना किया गया,
भ्रष्टाचार के खेल में पर्यावरण को भूला दिया गया ।
विभिन्न जीव जंतु भी हैं पर्यावरण के अंग,
पर बढ़ते प्रदूषण ने उनका जीवन किया बेरंग ।
गौरैया, गिद्ध, अन्य पक्षी, जलीय, जंतु समाप्ति की ओर हैं अग्रसर,
मनुष्य भी इसके प्रभाव से नहीं है बेअसर ।
पर्यावरण का संतुलन यदि ऐसे ही बिगड़ता रहेगा,
मनुष्य के जीवन पर भी इसका कुप्रभाव पड़ता रहेगा ।
आज पीने को शुद्ध पानी नहीं, साँस लेने को स्वच्छ हवा नहीं,
प्रदूषण से मनुष्य को ऐसे रोग मिले, जिनकी दवा नहीं ।
विकास के नाम पर पर्यावरण का शोषण रुकना चाहिए,
पर्यावरण की सुरक्षा के लिए सभी को जागरूक होना चाहिए ।

- संकलक

कु. नम्रता इस्वलकर, प्रथम वर्ष वाणिज्य





समय की माँग



आज समय की माँग यही है,
पर्यावरण बचाओ ।
ध्वनि, मिट्टी, जल, वायु आदि सब,
पर्यावरण हमारे ।
जीव जगत के मित्र सभी ये,
जीवन देते सारे ।
इनसे अपना नाता जोड़ो,
इनको मित्र बनाओ,
पर्यावरण बचाओ ।
तब तक जी है जगत में,
जब तक जगत में पानी ।
जब तक वायु शुद्ध रहती है,
सौंधी मिट्टी रानी ।
तब तक मानव का जीवन है,
यह सबको समझाओ,
पर्यावरण बचाओ ।

हरियाली की महिमा समझो, वृक्षों को पहचानों ।
ये मानव के जीवन दाता, इनको अपना मानो ।
एक वृक्ष यदि कट जाए तो,
ग्यारह वृक्ष लगाओ,
पर्यावरण बचाओ ।

जीव जगत की रक्षा करना, अब कर्तव्य हमारा ।
शोर और मिट्टी का संकट, दूर करेंगे सारा ।
एक वृक्ष हम नित रोपेंगे,
आज शपथ ये खाओ,
आज समय की माँग यही है,
पर्यावरण बचाओ ।

संकलक
कु. महेंद्र शेलके
प्रथम वर्ष कला

वृक्षों का वास रहने दे

वन में वृक्षों का वास रहने दे !
झील झरनों में साँस रहने दे !
वृक्ष होते हैं वस्त्र जंगल के,
छीन मत, ये लिबास रहने दे !
वृक्ष पर घोंसला है, चिड़िया का,
तोड़ मत, ये निवास रहने दे !
पेड़ पौधे चिराग हैं वन के,
वन में बाकी उजास रहने दे !



वन विलक्षण विधा है कुदरत की,
इस अमानत को खास रहने दे !
संकलक - कु. पूजा आंगवलकर
द्वितीय वर्ष कला

पर्यावरण की पुकार

काटने से पहले शाखे-पेड़ सोचना जरूर,
इस पर बसेरा होगा किसी परिंदे का ।
मेहनत से संजोया आशियाना अपना,
रोयेगा, कोसेगा, सोच यह काम है किसी दरिंदे का ।
आज तो कर देगा अनसुनी उसकी कराहें,
रंग लाएगी एक दिन उसकी बद-दुआएँ ।
न होना हैरान परेशान,
महरूम जब रिमझिम से हो जाए ।
दबा के पर्यावरण की आहें,
कल पाएगा तुही सजाए ।
जिनकी दम पर कायम साँसे तेरी,
कहाँ से लाएगा वो संजीवनी हवाएँ ?
देख प्रदूषण का कहर, कुदरत इन्सान से घबराए,
रफ़ता-रफ़ता दूर होती जाए ।
न सुधारी जो अपनी खताए,
कैसे पाएगा कुदरत से वफाए ?

संकलक - कु. सिद्धेश राणे
तृतीय वर्ष वाणिज्य





**Plant a tree
and add a new friend
in your life**



- ENGLISH SECTION -

**-: Section Editor :-
Asst. Prof. Mrs. Vandana Kakade**





INDEX



| Sr. No. | Poem / Article | Name of the Student |
|---------|-----------------------------|--------------------------|
| 1. | Environmental Pollution | Jasmin Hawaldar (TYBSC) |
| 2. | I Was Dreaming | Chetna Jadhav (SYBA) |
| 3. | The Environment | Priyanka Pawar (SYBA) |
| 4. | The Sound of Earth | Swati Narkar (FYBA) |
| 5. | Save the Earth | Rukhsar Hawaldar (TYBA) |
| 6. | Growth of A Tree | Mrunali Belekar (SYBCOM) |
| 7. | Nature is Crying | Prafulla Kadam (TYBA) |
| 8. | Tsunamis And Their Effects | Jasmin Hawaldar (TYBSC) |
| 9. | Trees : Our Best Friends | Akshay Pawar (FYBSC) |
| 10. | Natural beauty | Kalavati Sutar (SYBSC) |
| 11. | Voices Of A Tree | Satish Yadav (FYBA) |
| 12. | Look Outside | Darshan Shinde (FYBCOM) |
| 13. | Mother Earth | Ashlesha Yadav (FYBSC) |
| 14. | Awareness About Environment | Rukhsar Hawaldar (TYBA) |
| 15. | Nature Knows | Pratiksha Raorane (TYBA) |
| 16. | God Loans | Pratiksha Raorane (TYBA) |
| 17. | Resources of Environment | Hemant Sutar (FYBA) |
| 18. | A Choking Sky | Bhagyashri Shinde (SYBA) |
| 19. | Floods: A Natural Calamity | Rukhsar Hawalkar (TYBA) |
| 20. | Nature | Prafulla Kadam (TYBA) |
| 21. | Slogans | Prafulla Kadam (TYBA) |
| 22. | Quotes | Prafulla Kadam (TYBA) |
| 23. | Quotations | Rukhsar Hawalkar (TYBA) |



Environmental Pollution

Very often, people staying in urban areas, wonder why they feel so tired at the end of the day, even when they've done hardly any physical work during the whole day. When they visit a hill station or the countryside they discover to their joy that this sense of fatigue has disappeared. They are filled with the energy to do things they would never think of doing in their homes in the city. Why is this so?

The main reason for this is the high level of air pollution in cities. Slowly, our villages too are getting affected. Due to the increased levels of unhealthy gases emitted by vehicles and factories, people in surrounding areas are afflicted with respiratory problems of varying degrees. If steps are not taken to control air pollution in cities, the harm done will soon become irreversible.

Another kind of pollution is due to the dumping of chemical wastes into water bodies by the industries nearby. Thus it is very sad that our most sacred river, the Ganga, has become highly polluted over the years. Sewage is let out into the rivers and the sea contaminating the water. Sometimes, oil tankers accidentally spill oil into the sea, causing major damage to the flora and fauna in the sea.

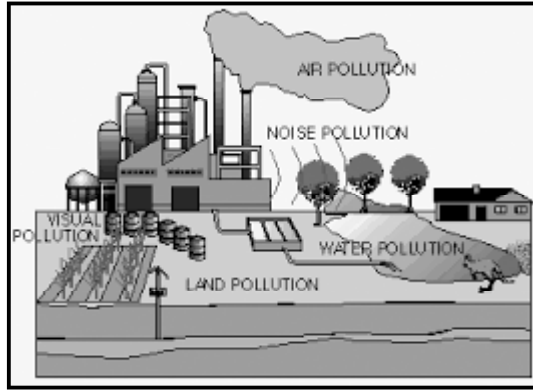
Noise pollution is another kind of pollution that affects the psychological and emotional well-being of people. We suffer from the sound made by the traffic - buses and trucks honking loudly, and oil maintained motorcycles and rickshaws roaring away. We

also have loud speakers blaring music till late into the night during festival time. Noise, beyond a certain limit, can lead to stress and even to deafness.

Though there are effective laws in the country to deal with all these kinds of pollution, they are not strictly implemented. Educa-

tion and social awareness have to play a great role in reducing these problems. The laws in this respect need to be enforced strictly. Planting trees, afforestation and looking after the forest reserves helps in decreasing all kinds of pollution. Pollution Under Control (PUC) tests, made compulsory for vehicles, have also helped a great deal. A strict check should be maintained on industries that pollute the atmosphere. Severe punishment should be meted out to those who break the law and cause pollution. Only then will people be able to breathe freely, eat clean food and drink pure water.

- Jasmin Hawaldar
(T. Y. B.Sc.)





I Was Dreaming !!

It was Beautiful
It was Green and Clean.
The smell of Fresh Air
The sound of the river flowing
I love everything happening there.
I pinched myself to see if it was real.
That was when I realized I was dreaming.
Couldn't it be real !

Compiled by :
Chetna Jadhav
(SYBA)



The Environment

The stars shine in the night sky
The moon was sitting bright and high
The Sun shone in the morning sky
The birds were flying really high

The rubbish sways in the cool breeze
So take your litter home please
We keep the forest neat and clean
so there is no pollution to be seen

The tall grass is spiky and green
when the wind blows it is clearly seen
Upon the mountain the trees sway
the leaves below away

Compiled by:
Priyanka Powar (SYBCOM)



The Sound of Earth

As I wake up in the morning,
I saw the sunshine in the window
As I go in the garden,
I was the flowers as they grow.

The trees in the mountain
Gives us fresh air to inhale,
It gives us water everyday,
and fulfill life every way.

How beautiful surroundings that we have,
Its a gift from up above,
May you be thankful of what you have,
And share the blessings from loving God.

Today is a great day,
It's a love fulfilling way,
It's because I have to say,
That god is my guidance all the way.

Compiled by :
Swati Narkar (FYBA)





SAVE THE EARTH



This is our earth, the only place we have to live on for now and in the future. World Environment Day, initiated by UNO in 1972, is celebrated on June 5. It is observed to create awareness among people about how our environment, which is fast being degraded, can be saved.

The chief causes of degradation are the clearing of forest land for agriculture and the excess emission of CO₂ into the atmosphere. Both these issues have to be tackled on a war footing because both these activities lead to a decrease of oxygen in the atmosphere. The day may very soon come when there will be no more oxygen left for us to breathe. The activities that we engage in are pushing us towards such a catastrophic end. the question we have to ask ourselves is, how do we save earth ?

Well, here are a few things that each of us can do in order to save the earth. First of all, we can do our best to know more about the flora and fauna around the world. We should develop in our minds and hearts a sincere love for the plants and animals. This will make us realize their importance and pre-

vent us from destroying them indiscriminately. We can also try to make others have and respect the plant and animal world.

Another thing that all of us must learn is to know how to conserve energy. For example, switching off electrical appliances when we don't need them; making the minimal use of appliances such as the microwave, the air conditioner and the geyser, using pressure cookers covering food while it is being cooked in order to conserve gas and other such practices will lead to conservation of energy.

As far as possible, we must avoid waste, whether it is water, electricity or gas or even material such as paper, pencil and so on. We should learn to recycle goods used at home, instead of throwing them away and buying new things. It is also important to avoid the use of plastics, as these are not biodegradable and their disposal becomes a great problem. Plastic degrades the quality of our soil as well as water bodies.

- Rukhsar Hawaldar
(T.Y.B.A.)





Growth of a Tree

I'm a little maple, oh so small,
In years ahead, I'll grow so tall !
With a lot of water, sun and air,
I will soon be way up there !

Deep inside the soil my roots are found,
Drinking the water underground.
Water from the roots my trunk receives,
Then my Trunk starts making leaves.

As I start to climb in altitude,
Leaves on my branches will make food,
Soon my trunk and branches will grow wide,
and I'll grow more bark outside !

I will be a maple very tall,
Losing my leaves when it is fall.
But when it is spring, new leaves will show,
How do trees grow ? Now you know !

- Compiled By :
Mrunali Belekhar
(S.Y.B.Com.)



Nature is crying You should know.....

Nature is crying, you should know
That it is sad, and sick.....
For humans are but monsters
That get what they can't keep.
Nature is crying, you should know

For it is imbalanced now
Because it's people come and go
without giving help somehow.
Nature is crying, you should know

The earth does none but weep.
For people are so dumb and Proud...

And they set the earth to heat !
nature is crying, you should know

Global warming is at hand.....
I Wonder that the future holds
If we will not give a stand

- Prafulla kadam
(T.Y.B.A.)





Tsunamis



& their effects.....

When there is submarine earthquake or a volcanic eruption in the ocean, the surface water is displaced and a series of waves is created that moves towards land. This series of waves is known as a Tsunami. The intensity of the earthquake decides the destructive power of the waves.

Tsunamis can be forecast with the help of Tsunometers. Through a country may receive the warning, that is no protection against Tsunamis. The coastal regions should be quickly evacuated so as to minimize the loss of life and property.

The devastating Tsunami in recent memory is the one that occurred on 26th December, 2004. An earthquake of 9.0 on the Richter Scale struck the ocean bed near the west coast of Sumatra island of Indonesia and created monstrous Tsunamis.

These killer waves travelled a distance of 2000 km and struck the coast of Sri Lanka

and India with full force. These Tsunami Waves caused terrible loss of life and property in as many as 13 countries of South Asia.

More than 200,000 people were reported dead or missing. The Tsunami affected the fishing, the tourism and the shipping industries. It also destroyed thousands of acres of natural formations and vegetation.

Though one cannot prevent such natural calamities, some precautionary measures can certainly be taken. It is said that mangroves and other such coastal vegetation help in reducing the intensity of the Tsunamis.

Above all, quick and effective relief measures can mitigate the scale of devastation

- Jasmin Firoz Hawaldar

(T.Y. B.Sc.)





Trees ! Our Best friends.....

Many of us have quality of taking everything around us for granted, even our parents, friends and teachers. But what we neglect most are those that have been serving us quietly for year like the Nature around us.

A part of that nature, trees, have been about for hundreds of years. They have provided shelter, shade, food, medicines and useful raw material for making innumerable products. Prouduts like rubber, plastic, newspapers, chocolates, cocoa, juices and so on.

These trees are also provided wood for the constructions of houses, furniture, bats and tools. Even today they provide fuel for millions of homes. In our country most people rely on wood for cooking and keeping warm in winter. Our boats and canoes are made by wood.

Trees have also helped to maintain the balance of gases. We need oxygen to survive. The carbon dioxide in atmosphere is converted by trees and plants into oxygen. Our very lives have depended on trees and plants all these years.

Today trees are even more vital to us. With all the poisonous gases that our industries and jets produce and the pollution they cause, we need trees all the more. At last people are becoming aware of the importance

of trees to all forms of life. We are trying to stop senseless slaughter of trees. Man's greed has almost brought destruction to all life on the earth. Today, people all over the world have united to save and protect man's best friends - the Trees.

Trees also help the conservation of soil. It stops soil erosion and make it possible to cultivate our fields and lands by protecting the top soil.

Over the years trees are provided homes to our birds and proper environment for all wild life and other forms of life found in forests. Trees have played the central role in preserving nature and life on the earty.

We are therefore indebted to trees. They have served us for centuries silently and selflessly. We have begun to appreciate their importance. So let us all unite to protect, save and grow more trees. We also own the future generations, the chance to see Nature at its best, and the best chance of survival. Let us remember that trees are our best friends, they need to be carefully nurtured and not taken fro granted or neglected.



- Akshay Pawar
(F.Y. B. Sc.)





Natural Beauty

The earth is a truly remarkable place,
but environment is
something that all too often we take for
granted.
The natural beauty of seas and forests is
beyond compare,
and yet we continue to pollute and corrupt
them.
We depend on our environment for every
existence.
While all the while we continue to
destroy it for materialistic gain.
If humanity wishes to thrive,
We need to learn to protect and embrace
this planet and not work against it.

- Compiled by
Kalavati Sutar
(S. Y. B. Sc.)

Voices of A Tree



Human's approached me for food,
I gave them as much as I could,
Men approached me for shelter,
I extended my branches in the burning
Surrounding's last they falter.
But here come people with their tool's,
To raze tree & build roads, malls & pools.
Are you going to cut me now ?
Oh they do not seem to hear as they
bring their axe near.
Oh is there no one here to
convince these men....
That trees are boon not bane.
But they have already brought their axe near,
because they will not hear.
Listen o ! thee, listen to the
voice of the dying tree

- compiled by
Satish yadav
(F. Y. BA.)

"It follows then as certain as that night succeeds the day, that without a decisive naval force we can do nothing definitive, and with it, everything honorable and glorious."

- George Washington





Look Outside

Look outside, see the trees
watch the flowers in the breeze

Things won't be like this in a year or two
If polluting is all we do.

Seize the night, seize the day
Things won't always be this way

Thousands of people are dying
In the night you hear children crying

Let's stop the war
our people are bore

The world can't help itself
who cares about your wealth

Let me help you to
show the world what you can do.

- **Darshan Shinde**
(F.Y. B.Com.)

Mother Earth



Mother nature our world is always changing,
Constantly rearranging.

From ocean depths to mountain peaks,
Mother nature moves & speaks.

While telling stories of our past.
She tries to teach us how to last.

Mankind, so smart, sometimes blind
Leaves common sense far behind

We're moving fast and living large,
Forgetting she's the one in charge.

Amazed when she rings our bell,
Sending us through living hell.

She can twist our steel, shake any city,
If her wrath you feel, we shall pity.

Yet some who speak o her behalf,
I fear just seek, the golden calf.

It's true, we must treat her right
or we will incur a deadly plight.

Treat her with distinction
Or surely face extinction !

- **Ashelesh Yadav**
(F. Y. B. Sc.)





Awareness About Our Environment

Broken bottles and charred pieces of glass
Wadded up newspapers tossed on the grass
Pouring of concrete and tearing out trees
This is the environment that surrounds me ?

Poisons and insecticides sprayed on our food
Oceans filling with thick oil crud
All sea life destined to a slow awful doom
These are the things we are to consume ?

Mills pumping out iron expelling yellow fumes
Airlines emitting caustic gases from fuels
Weapons of destruction tested at desolate sites
And this is the air that's to sustain life ?

There has to be something that someone can do
Like raise the awareness among those around you
That if we don't need the problem at hand
It's your life that's at stake, the destruction of man.

- Rukhsar Hawaldar
T. Y. B.A.



Nature Knows

Do you know ?

Do you understand ?

Do I know ?

Do I Understand ?

Nature knows, nature understands

That every time you rob her of her very own-
her plants, her animals, her gems
she gives her best-fresh air, water and all
But you give back to her chemicals & poi-
sons in the air and water,
take from her so much and there's little or
nothing left.

She then gets angry - the storms, typhoons,
Tsunamis, cyclones

she cries, she weeps - the drizzles, vengeful
downpours, floods

she staves - the droughts, famines and
deserts.

Now you and I Know and understand.

Help her, Save her !!!

- Compiled by :
Pratiksha Raorane
(T.Y. B.A.)





God Loans

Earth,
is a gift of god to the people live there
but they have forgotten.

Men are now,
Cutting down the trees
Throwing rubbish into the river
and even open burning

Previously.
We can still lay on the grass,
As it feels like laying on a carpet.
We can still bathing in the river,
as the water is clear
We can still take morning walk
as the air is refreshing
BUT, it is no longer.

Man,
Our Mother Nature should be preserved and
protected for our young generation.

Compiled by :
Pratiksha Raorane (T. Y. B. A.)

NATURE

Need to be environmet friendly
All electrics need to be turned off when not in use
The world needs to save energy
You are a part of this too.
Recycling is excellent for the earth
Everyone needs to help out.

- **Prafulla Kadam**
(T. Y. B. A.)



Resources of Environment

The world is finite,
resources are scarce,
Things are bad and will be worse
Coal is burned and gas exploded
Forests out and soil eroded.
Wells are dry and air polluted
Dust is blowing
trees are uprooted
oil is going, trees depleted
Drains receive what is excreted
Land is sinking,
Seas are rising
Man is far too enterprising
Fires will rage with man to fan it,
soon we will have a plundered planet.

Compiled by :
Hemant Sutar
(F. Y. B. A.)

A choking sky

Watching smoke stacks choke the sky
Always makes me want to cry
I just can't help but wonder why
The factories won't even try
To find a safer, better way
To put their poisonous waste away.

Compiled by :
Bhagyashri Shinde
(S.Y.B.A.)





Floods - A Natural Calamity



"Floods in Assam", 'Flash floods kill hundreds' - We often read such headlines in the newspapers during monsoon. Floods happen regularly and the newspapers very often carry reports of the Brahmaputra, The Ganga, the Yamuna and the other rivers getting flooded and overflowing their banks, causing large scale damage and destruction. Floods may be caused by excessive rainfall in the catchment area of a river, or by a breach in dam. In the rivers of northern India, floods are sometimes caused by the melting of snow in the Himalayas.

Floods take a heavy toll of life and property. Flood waters destroy vast tracts of arable land, and carry away the fertile top soil. People lose their belongings and rendered homeless. Crops in the fields perish and goods in the flooded shops and godowns get damaged. Roads, Railway lines and bridges are also damaged. The breakdown of electric supply plunges vast areas into darkness villages are marooned and people have to go without food and water for days. Sometimes there is an outbreak of epidemics during and after floods.

Today, because of the advancement in science, floods can be predicted to a

certain extent. People can be forewarned and asked to move to safer places. Flood victims are given quick relief, thanks to the modern methods of communication and transport. Flood packets and medicines are air dropped from helicopters to the people trapped in the flood. Government machinery and non-government organisations (NGOs) come forward to help and rescue the victims.

Floods leave in their wake a trail of death and destruction, we see the ghastly sight of the dead bodies of human beings and animals stuck in the mud. It takes months to repair the roads, rail lines and damaged bridges.

It is high time the government devised safety measures to prevent the recurrence of floods. These measures must include the building of dams, canals and embankments, growing more trees and preserving the forests. Those areas which are prone to regular floods must be given special attention. Then we shall be able to overcome this problem and prevent or reduce the destruction of precious lives and property.

- Rukhsar Hawaldar
(T. Y. B. A.)





Slogans

- 1) Forests are green, oceans are blue, Keep the earth clean, for me and you.
- 2) Take care of the Earth and Earth will take care of you.
- 3) Save the Environment and you will save the life and future.
- 4) We were born to help the world, Not to destroy it,
Then why we are destroying the Environment ?

Quotes

- 1) "Nature gives to every time and season some beauties of its own"
- Charles Dickens
- 2) "Trees are the Earth's endless effort to speak to the listening heaven."
- Rabindranth Tagore
- 3) "Winter is in my head, but the eternal spring is in my heart"
- Victor Hugo

Prafulla Kadam
(T. Y. B. A.)

Quotations about Environment

- 1) The earth has enough for everyone's need but not for anyone's greed !
- 2) Only after the last drop of water is used, only after the last river is poisoned, man will realise that money can't be eaten !
- 3) Nature is the beauty, to save it is our duty!
- 4) Man's development is a boon, but over development is a bane.
- 5) Simple actions in our daily lives would result in far reaching consequences and will decide whether life would flourish or perish !
- 6) Another pair of leather shoes are easy to buy, but can we afford another 'planet' ?
- 7) If you don't have conviction, wildlife will face extinction !

Rukhsar Hawaldar
T. Y. B. A.





– विभागीय वार्षिक अहवाल –

१. राष्ट्रीय सेवा योजना
२. जिमखाना विभाग
३. सांस्कृतिक विभाग
४. आजीवन अध्ययन आणि विस्तार विभाग
५. ग्रंथालय विभाग
६. परीक्षा विभाग
७. महिला विकास कक्ष
८. आविष्कार
९. विद्यार्थी कल्याण विभाग
१०. IQAC Report
११. मराठी भाषा व वाङ्मय मंडळ
१२. इंग्लिश लिटररी असोसिएशन
१३. राष्ट्रभाषा प्रचार समिती केंद्र
१४. महाराष्ट्र विवेक वाहिनी
१५. पालक – शिक्षक संघ
१६. माजी विद्यार्थी संघ
१७. स्पंदन - भिन्तीपत्रक
१८. विद्यार्थी समुपदेशन विभाग
१९. स्पोकन इंग्लिश कोर्स
२०. निसर्गमंच
२१. सहलविभाग
२२. स्पर्धा परिक्षा
२३. गांधी विचार संस्कार परीक्षा केंद्र
२४. Science Association



● राष्ट्रीय सेवा योजना ●



राष्ट्रीय सेवा योजना युनिट - २

एकूण स्वयंसेवक - २००

विद्यार्थी - १०१

विद्यार्थीनी - ९९

कार्यक्रम अधिकारी :

१) प्रा. डी. एस. बेटकर

२) प्रा. एम. आय. कुंभार

शैक्षणिक वर्ष २०१४-१५ या वर्षात राष्ट्रीय सेवा योजनेच्या २०० स्वयंसेवकांची विद्यापीठात नोंदणी करण्यात आली. मुले - १०१ व मुली - ९९. इतर प्रवर्गातून एकूण १८९ एस.सी. चे ०९, एस. टी. प्रवर्गाच्या २ स्वयंसेवकांची नोंदणी करण्यात आली. राष्ट्रीय सेवा योजनेचे कार्यक्रम अधिकारी म्हणून प्रा. डी. एस. बेटकर व प्रा. एम. आय. कुंभार काम पाहतात. प्राचार्य डॉ. सी. एस. काकडे यांच्या मार्गदर्शनाखाली प्रथम सत्रामध्ये विविध उपक्रमांचे आयोजन करण्यात आले. वापरलेल्या वहीतील उरलेल्या कच्चा पानापासून वह्या तयार करून वाटप करणे हा प्रकल्प राबविण्यात आला. (एकूण ५०० वह्यांचे वाटप वैभववाडी येथील एकूण तीन शाळांमध्ये आर्थिक दृष्ट्या गरीब विद्यार्थ्यांना करण्यात आले.) तसेच आपत्ती व्यवस्थापन कक्ष व रेड रीबन कक्ष स्थापन करण्यात आले. या कक्षा अंतर्गत खाली प्रकल्प व उपक्रम राबविण्यात आले. व जनजागरण कार्यक्रम राबविण्यात आला. त्याचप्रमाणे खालील नियमित उपक्रम घेण्यात आले.

प्रकल्प :

१) वीजबचत - या प्रकल्पांतर्गत वीजेची बचत करण्याकरिता जनजागृती करण्यात आली. विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन करण्यासाठी वीजबचतीवर उद्बोधन वर्ग घेण्यात

आला. वैभववाडी वीजमंडळाचे अधिकारी श्री. गायकवाड व श्री. शिंदे यांनी दि. २२ ऑगस्ट २०१४ रोजी उद्बोधन वर्गात मार्गदर्शन केले. त्यांनी प्रोजेक्टरच्या सहाय्याने वीज कशी निर्माण होते, तिचे वितरण, महत्व, विजेचा योग्य वापर व बचत कशी करावी तसेच निष्काळजीपणमुळे होणाऱ्या दुर्घटना इ. विषयावर माहिती दिली. त्यानुसार स्वयंसेवकांना त्यांच्या गावातील/ वाडीतील कुटुंबांचे सर्वेक्षण करून ५ कुटुंबांची प्रकल्पकरीता निवड करावी असे सांगण्यात आले. सप्टेंबर, ऑक्टोबर, नोव्हेंबर व डिसेंबर या चार महिन्यांमध्ये या ५ कुटुंबांना भेटी देवून व त्यांचे वीज बील तपासून नोंदी घ्याव्यात असे सांगण्यात आले.

२) वह्या वाटप - सुरुवातीला दि. ६ सप्टेंबर २०१४ रोजी व्याख्यान आयोजित करून स्वयंसेवकांना पर्यावरणाचे महत्व सांगण्यात आले. यावेळी प्रा. डी. एस. बेटकर यांनी मार्गदर्शन केले. त्यानंतर दि. १० सप्टेंबर २०१४ रोजी कार्यक्रम अधिकाऱ्यांनी प्रकल्प राबविण्याविषयी माहिती दिली. व वह्या तयार करण्याचे प्रशिक्षण दिले. त्यानंतर १५ ते २० दिवसांच्या कालावधीत स्वयंसेवकांनी जुन्या वापरलेल्या वह्यांतील उरलेली कोरी पाने गोळा केली. दि. १७ ऑक्टोबर २०१४ रोजी वैभववाडी येथील एकूण ३ शाळांमध्ये गरीब विद्यार्थ्यांना ५०० वह्यांचे वाटप करण्यात आले.





यावेळी स्वयंसेवकांनी शाळेतील विद्यार्थ्यांचे प्रबोधन केले. व वहा तयार करण्याचे प्रशिक्षण दिले.

३) कन्या वाचवा - या प्रकल्पांतर्गत दि. २५ सप्टेंबर २०१४ रोजी प्रा. सौ. एस. एस. पाटील यांचे महिला सक्षमीकरण, स्त्रीभ्रुणहत्या व स्त्रियांचे घटते प्रमाण या विषयावर व्याख्यान आयोजित करण्यात आले. प्रा. ए. एम. कांबळे व प्रा. सौ. व्ही. सी. काकडे यांनी विद्यार्थ्यांना महिला सक्षमीकरण, स्त्रीभ्रुणहत्या व स्त्रियांचे घटते प्रमाण या विषयासंदर्भात विविध चित्रफिती दाखविल्या. संवेदनशीलता व स्त्री-पुरुष समानता निर्माण होण्यासाठी जागर जाणिवांचा अभियान राबविण्यात आले. यामध्ये गटचर्चा, व्याख्यान, स्वयंसेवकांकडून स्त्री-पुरुष समानता निर्माण होण्यासाठीच्या सूचना घेणे इ. कार्यक्रम घेण्यात आले. दिनांक २९ सप्टेंबर २०१४ रोजी श्रीमती अरुणा पाटील (सहसचिव, भाकर संस्था, लांजा) यांचे स्त्रीभ्रुण हत्या यावर व्याख्यान आयोजित करण्यात आले.

४) आपत्ती व्यवस्थापन - दि. ८ जून ते १७ जून २०१४ या कालावधीत नागपूर येथील राज्यस्तरीय आव्हान शिबीरामध्ये २ स्वयंसेवक सहभागी झाले. आव्हान आपत्ती व्यवस्थापन शिबीरातून प्रशिक्षण घेतलेल्या काही स्वयंसेवकांनी तसेच माजी कार्यक्रम अधिकारी सौ. वंदना काकडे यांनी फोटो व व्हिडीओ शुटींग यांच्या सहाय्याने स्वयंसेवकांना आपत्ती व्यवस्थापनाविषयी मार्गदर्शन केले. आपत्ती व्यवस्थापन कक्षाची स्थापना करण्यात आली. त्यामध्ये १५ विद्यार्थी व १५ विद्यार्थीनींची नोंदणी करण्यात आली. त्यामुळे पावसाळ्यात येणाऱ्या अनेक आपत्तींच्या वेळी स्वयंसेवकांनी लोकांना मदत केली. पावसाळ्यात घाट बंद असताना आमच्या स्वयंसेवकांनी घाट चालू करण्यास मदत केली.

५) जलसंवर्धन - या प्रकल्पांतर्गत दि. १७ ऑगस्ट २०१४ रोजी पाण्याचा योग्य वापर, बचत व स्वच्छता या विषयावर प्रा. एम. आय. कुंभार यांचे व्याख्यान झाले. दि. १४ ते १६ ऑगस्ट २०१४ रोजी वृक्षरोपण कार्यक्रम घेण्यात आला. दि. १० सप्टेंबर २०१४ विहिर व पाण्याची टाकी परीसर स्वच्छता करण्यात आली. लावलेल्या वृक्षांची वेळोवेळी पाणी घालून काळजी घेण्यात आली. सोनाळी येथे दि. ०६ व ०७ जानेवारी २०१५ रोजी नदीवर बंधारा बांधण्यात आला. त्यासाठी २-३ दिवस पूर्वतयारी करण्यात आली.

६) जयंतीदिन व राष्ट्रीय दिन - राष्ट्रीय सेवा योजना विभागामार्फत विविध राष्ट्रीय पुरुषांचे जयंतीदिन व राष्ट्रीय दिन साजरे केले जातात. या मध्ये छ. राजर्षी शाहू महाराज महाराणा प्रतापसिंह, महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, छत्रपती शिवाजी महाराज, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आदि युगपुरुषांचे जयंतीदिन साजरे करण्यात आले. तर स्वातंत्र्यदिन, शिक्षक दिन जागतिक साक्षरता दिन, राष्ट्रीय संविधान दिन, राष्ट्रीय युवा दिन आणि प्रजासत्ताक दिन यांसारखे राष्ट्रीय दिन ही मोठ्या उत्साहात साजरे करण्यात आले.

७) उद्बोधनवर्ग व कार्यशाळा - दि. २५ जुलै २०१४ रोजी रा. से. यो. उद्बोधन वर्ग घेण्यात आला. प्रा. सौ. व्ही. सी. काकडे यांनी स्वयंसेवकांना मार्गदर्शन केले. दि. १३ ऑगस्ट २०१४ रोजी ग्राहक मार्गदर्शन केंद्र मुंबईच्या वतीने स्वयंसेवकांना श्री त्रिलोभ मिश्रा यांनी मार्गदर्शन केले. दि. २४ ऑगस्ट २०१४ रोजी वीज बचत कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात आले त्यामध्ये श्री. विकास गायकवाड यांनी स्वयंसेवकांना विशेष मार्गदर्शन केले. दि. २६ सप्टेंबर २०१४ रोजी महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांना अॅड. श्रीमती भाग्यश्री पवार यांनी संविधानात्मक





तरतुदी व कायदेविषयक मार्गदर्शन केले. दि. ३ मार्च २०१५ रोजी विद्यार्थ्यांमध्ये भ्रष्टाचार विरोधी जाणीव जागृती व्हावी या उद्देशाने मा. जगदिश सावंत, उपशिक्षक भ्रष्टाचार विरोधी विभाग सिंधुदुर्ग यांनी विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन केले.

९) स्वच्छ भारत अभियान - या अभियानांतर्गत दि. २० नोव्हेंबर २०१४ रोजी ज्येष्ठ नागरिक संघ तसेच विद्यालयातील स्वयंसेवक, प्राचार्य, प्राध्यापक व सर्व शिक्षकेतर कर्मचारी वर्ग आणि वैभववाडीतील प्रतिष्ठित नागरिकांच्या वतीने वैभववाडी बाजारपेठ व शहरातील व शहरातील सर्व परिसर स्वच्छता केली. याशिवाय प्रत्येक महिन्यात स्वयंसेवकांनी साप्ताहिक परिसर स्वच्छता केली. सोनाळी येथे निवासी शिबिरादरम्यान सोनाळी प्रवेशद्वार ते प्राथमिक शाळा स्वच्छता केली.

१०) राष्ट्रीय सेवा योजना सप्ताह - राष्ट्रीय सेवा योजना स्थापना दिनाचे औचित्य साधून दि. २४ सप्टेंबर २०१४ ते २ ऑक्टोबर २०१४ हा कालावधी राष्ट्रीय सेवा योजना सप्ताह साजरा करण्यात आला. या सप्ताहामध्ये दि. २४ सप्टेंबर रोजी देशभक्तीपर गीते, पोवाडे, भारूडे सादर केली. दि. २५ सप्टेंबर रोजी प्रा. सौ. एस. एस. पाटील व प्रा. सौ. व्ही. सी. काकडे यांनी स्त्री प्रतिष्ठा या विषयावर व्याख्यान दिले.

दि. २६ सप्टेंबर रोजी अॅड. भाग्यश्री पवार यांचे कायदेविषयक मार्गदर्शन आयोजित करण्यात आले. दि. २७ सप्टेंबर रोजी स्त्रीभ्रूण हत्या व महिला सक्षमीकरण या विषयावर पोस्टर्स प्रदर्शनाचे आयोजन केले. तर 'मोकळा श्वास' व 'अस्तिस्व' चित्रपट दाखविण्यात आला. दि. २८ सप्टेंबर रोजी रस्ता सुरक्षा अभियानांतर्गत 'वेगाची नशा करी जीवनाची दशा' या सदराखाली भितीपत्रक व घोषवाक्य स्पर्धा घेण्यात आली. 'रस्ता सुरक्षा काळाची गरज व रस्ते सुरक्षा अभियान युवकांचा सहभाग' या विषयावर वक्तृत्व

स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले.

दि. २९ सप्टेंबर रोजी मा. तहसिलदार, वैभववाडी तालुका व राष्ट्रीय सेवा योजना विभाग यांच्या संयुक्त विद्यमाने मतदान जनजागृती रॅली वैभववाडी शहरात काढण्यात आली.

दि. ३० सप्टेंबर रोजी 'शांती व अहिंसा' या विषयावर प्रा. आर. एम. गुलदे यांचे मार्गदर्शन आयोजित करण्यात आले.

दि. १ ऑक्टोबर रोजी व्यसनमुक्ती जनजागृती रॅलीचे आयोजन करण्यात आले या रॅलीमध्ये स्वयंसेवकांबरोबर महाविद्यालयातील इतरही विद्यार्थी सहभागी झाले होते.

दि. २ ऑक्टोबर रोजी महात्मा गांधी जयंती निमित्त विद्यार्थ्यांनी अहिंसा, शांतता व स्वच्छतेची प्रतिज्ञा घेतली तसेच स्वच्छता मोहिम राबविण्यात आली.

११) सामाजिक जागृती - सामाजिक कर्तव्ये व जबाबदारीची जाणीव राष्ट्रीय सेवा योजनेतून होते. त्यामुळे समाजातील जनमानसांमध्ये विविध समस्यांबाबत जाणीव जागृती व्हावी या उद्देशाने पुढील काही उपक्रम राबविण्यात आले.

मतदाता जनजागृती रॅली :- २९ सप्टेंबर २०१४

राष्ट्रीय एकात्मकता दौड :- ३१ ऑक्टोबर २०१४

एच. आय. व्ही. एडस जनजागृती रॅली :- १ डिसेंबर २०१४

ग्राहक जनजागृती रॅली :- २४ डिसेंबर २०१४

हॅल्मेट रॅली :- १७ जानेवारी २०१४

१२) बौद्धिक कार्यक्रम - महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांचा बौद्धिक विकास व्हावा, त्यांच्या कल्पना शक्तीला, विचारांना दिशा मिळावी तसेच त्यांना आपले विचार मांडता यावेत या राष्ट्रीय सेवा योजना मार्फत पुढील उपक्रम राबविण्यात आले.

- राष्ट्रीय सेवा योजना व नेहरू युवा केंद्र सिंधुदुर्ग यांच्या संयुक्त विद्यमाने भारतीय लोकशाही व राजकारण या विषयावर वक्तृत्व स्पर्धा आयोजित केले.

- शांती व अहिंसा याबाबत प्रा. आर.





एम. गुलदे यांनी स्वयंसेवकांना मार्गदर्शन केले.

- दि. १४ नोव्हेंबर रोजी ग्रामीण रुग्णालय वैभववाडी यांच्या संयुक्त विद्यमाने मधुमेह व कॅन्सर दिनानिमित्त वक्तृत्व स्पर्धा आयोजित केली.

- ८ सप्टेंबर २०१४ रोजी मा. राहुल पाटील, संचालक स्टडी सर्कल यांचे स्पर्धा परीक्षा यशाची गुरुकिल्ली या विषयावर व्याख्यान आयोजित केले.

- दि. १९, २० डिसेंबर संशोधन प्रतिष्ठान, मुंबईच्या संयुक्त विद्यमाने दोन दिवसीय स्पर्धापरीक्षा मार्गदर्शन वर्गाचे आयोजन केले.

१३) रेड रिबन क्लब - दिनांक २८ जुलै २०१४ रोजी जागतिक कावीळ दिनाचे औचित्य साधून रेड रिबन क्लबची स्थापना करण्यात आली या क्लब मार्फत दि. १ डिसेंबर रोजी एच. आय. व्ही एड्स जनजागृती रॅलीचे आयोजन करण्यात आले तसेच २ डिसेंबर रोजी श्रीमती महानंदा पाटील यांचे मार्गदर्शन आयोजित करण्यात आले. तर दि. १९ डिसेंबर २०१४ रोजी रक्तदान शिबिराचे आयोजन करण्यात आले.

१४) सांस्कृतिक उपक्रम - १५ ऑगस्ट स्वातंत्र्य दिनानिमित्त देशभक्तीपर गीत गायन, राष्ट्रगीत गायन करण्यात आले.

दि. २४ सप्टेंबर रोजी देशभक्तीपर गीते, पोवाडे, भारूडे तसेच व्यसनमुक्तीपर आधारित समुहगीत गायनाचा कार्यक्रम करण्यात आला.

दि. १२ जानेवारी २०१५ रोजी राष्ट्रीय युवा दिनानिमित्त स्वामी विवेकानंदांच्या स्वप्नातील युवक, आजचा युवक व स्वामी विवेकानंदांचे विचार यावर आधारित वक्तृत्व स्पर्धा आयोजित करण्यात आली.

दि. २६ जानेवारी २०१५ रोजी प्रजासत्ताक

दिनानिमित्त देशभक्तीपर गीते सादर करण्यात आली.

१५) जिल्हा स्तरीय तसेच राज्यस्तरीय उपक्रमातील सहभाग - दि. ८ जून ते १७ जून २०१४ या दरम्यान नागपूर येथे झालेल्या आव्हान शिबिरात श्री. सुरज चेंदूरकर व श्री. ओंकार कदम हे स्वयंसेवक सहभागी झाले.

एस. आर. डी. / एन. आर. डी. / उत्कर्ष / आव्हान निवड शिबिरासाठी एकूण आठ विद्यार्थी मालवण येथे पाठविण्यात आले. त्यापैकी कु. प्रसाद नारकर व कु. सोनल मोरे यांची एस. आर. डी. राज्यस्तरीय शिबिरासाठी जिल्ह्यातून निवड झाली.

११ सप्टेंबर २०१४ ते १३ सप्टेंबर २०१४ दरम्यान अमरावती येथे झालेल्या एस. आर. डी. शिबिरामध्ये श्री. प्रसाद नारकर व कु. सोनल मोरे हे दोन स्वयंसेवक सहभागी झाले.

२९ सप्टेंबर २०१४ रोजी निरंजन शिंदे व कु. प्राजक्ता आडीवरेकर या दोन स्वयंसेवकांची मतदाता ब्रँड ॲम्बेसिडर म्हणून मा. तहसिलदार यांच्याकडून नियुक्ती झाली.

दि. १२ जानेवारी २०१५ ते १८ जानेवारी २०१५ दरम्यान संगमेश्वर, रत्नागिरी येथे झालेल्या विद्यापीठ निवासी शिबिरामध्ये श्री. उत्तम सुतार व श्री. अक्षय गुरव हे दोन स्वयंसेवक सहभागी झाले होते.

दि. २४ ते २५ जानेवारी २०१५ जिल्हास्तरीय पर्यटन कार्यशाळेमध्ये चार स्वयंसेवक सहभागी झाले होते.

दि. २१ फेब्रुवारी ते २२ फेब्रुवारी २०१५ रोजी सविता आश्रम, कुडाळ येथे आपत्ती व्यवस्थापन कार्यशाळेत ३ स्वयंसेवक सहभागी झाले.

२२ ऑगस्ट ते २६ ऑगस्ट २०१४ दरम्यान ओरोस येथील जिल्हा नेतृत्व शिबिरामध्ये २ स्वयंसेवक सहभागी झाले.





निवासी श्रमसंस्कार शिबीर

वैभववाडी येथील आनंदीबाई रावराणे कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालयातील राष्ट्रीय सेवा योजना विभागाचे सात दिवसीय विशेष निवासी श्रमसंस्कार शिबीर, रामकृष्ण फार्म हाऊस, सोनाळी या ठिकाणी दि. ४ जानेवारी ते १० जानेवारी २०१५ दरम्यान यशस्वीरित्या पार पडले. या शिबिरात एकूण ५४ मुले व ४६ मुली असे एकूण १०० जण सहभागी झाले होते. उदघाटन प्रसंगी महाविद्यालयाचे संस्था पदाधिकारी मा. श्री. विजय बा. रावराणे, सहसचिव म. प्र. शिक्षण संस्था, मा. श्री. सज्जन वि. रावराणे, अध्यक्ष स्थानिक समिती, मा. श्री. प्रमोद पुं. रावराणे, विश्वस्त, मा. श्री. यशवंत पांडुरंग रावराणे, विश्वस्त व इतर पदाधिकारी, मा. श्री. अरविंद रावराणे, माजी सभापती, वैभववाडी, मा. श्री. प्रकाश शेलार, सरपंच-सोनाळी, मा. श्री. राजेंद्र रावराणे-पोलीस पाटील, सोनाळी, मा. श्री. योगेश रावराणे, मा. श्री. मनोज सावंत, अध्यक्ष तालुका व्यापारी मंडळ, मा. श्री. श्री. राठोड, सर्कल ऑफिसर, ग्रामस्थ, पत्रकार बंधू, प्राचार्य डॉ. सी. एस. काकडे तसेच प्राध्यापक व शिक्षकेतर कर्मचारी उपस्थित होते.

या शिबिरामध्ये पहाटे प्रार्थना, व्यायाम, योगा, प्राणायाम तसेच श्रमदानामध्ये रस्ता दुरुस्ती, ग्रामस्वच्छता अभियान, बंधारा निर्मिती, शोषखड्डे निर्मिती, वृक्षारोपण असे विविध उपक्रम राबविण्यात आले. दुपारच्या बौद्धिक सत्रामध्ये प्रा. जगदीश राणे यांचे 'आपत्ती व्यवस्थापनात युवकांची भूमिका' या विषयावर, रा. से. यो. विभागाचे जिल्हा समन्वयक

प्रा. डॉ. खंडेराव कोतवाल यांचे 'स्वच्छता अभियान' या विषयावर, कृषी पर्यवेक्षक श्री. आर. एम. दळवी यांचे 'आधुनिक शेती व ग्रामीण विकास' या विषयावर, डॉ. राजेंद्र पाताडे यांचे 'सकारात्मक दृष्टिकोनाचे महत्त्व' या विषयावर मा. श्री. विवेक घाटविलकर व मा. श्री. विलास कोळपे - अ. भा. अंनिस सामाजिक कार्यकर्ते यांचे 'अंधश्रद्धा व आजचा युवक' या विषयावर, मा. श्री. देवेंद्र पाटील, सचिव 'भाकर' संस्था लांजा व श्रीमती अरुणा पाटील-सहसचिव 'भाकर' संस्था लांजा यांचे 'महिला सबलकरण' या विषयावर व्याख्याने आयोजित करण्यात आली. सायंकाळच्या वेळेत खेळ, प्रार्थना, गटचर्चा व दैनंदिनी लेखन व रात्री जेवणानंतर सांस्कृतिक कार्यक्रमांचे आयोजन करण्यात आले.

दि. १० जानेवारी २०१५ रोजी दुपारी शिबीर समारोपाचा कार्यक्रम संपन्न झाला. यावेळी मा. श्री. रघुनाथ फ. रावराणे, कार्याध्यक्ष, म.प्र. शिक्षणसंस्था, मा. श्री. विजय बा. रावराणे, सहसचिव, म.प्र. शिक्षणसंस्था, मा. श्री. गणपत दा. रावराणे, श्री. यशवंत पां. रावराणे, मा. श्री. प्रमोद पुं. रावराणे, विश्वस्त, मा. श्री. अरविंद रावराणे, माजी सभापती वैभववाडी, मा. श्री. प्रकाश शेलार, सरपंच, सोनाळी, मा. श्री. राजेंद्र रावराणे, पोलीस पाटील सोनाळी, मा. श्री. योगेश रावराणे सोनाळी, महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. सी. एस. काकडे, कार्यक्रम अधिकारी, प्राध्यापक व स्वयंसेवक उपस्थित होते. अशाप्रकारे निवासी श्रमसंस्कार शिबिराची सांगता झाली.





● जिमखाना विभाग ●

आनंदीबाई रावराणे कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालयामध्ये जिमखाना विभाग कार्यरत असून मुंबई विद्यापीठाच्या क्रिडा विभागाकडून निर्गमित झालेल्या परिपत्रकानुसार व महाविद्यालयीन स्तरावरील विविध क्रीडा स्पर्धा कार्यक्रम नियोजनानुसार व्हॉलीबॉल, कबड्डी, लंगडी या सांघिक आणि कुस्ती, कराटे, कॅरम, ज्युडो अशा इतर अनेक वैयक्तिक क्रीडा प्रकारामध्ये महाविद्यालयाचे विद्यार्थी सहभाग घेतात. या सर्व क्रीडा प्रकारांना महाविद्यालयाकडून व क्रीडा तज्ज्ञांकडून सतत मार्गदर्शन दिले जाते. विद्यार्थ्यांच्या क्रीडा नैपुण्य विकासासाठी महाविद्यालय सतत तत्पर असते.

महाविद्यालयातील कांही विद्यार्थ्यांनी खालीलप्रमाणे यश संपादन करून महाविद्यालयाचे नांव उंचाविले आहेत.

❖ मुंबई विद्यापीठ पातळीवर रौप्यपदक

१) मुंबई विद्यापीठ अंतर्गत सन २०१४-२०१५ या शैक्षणिक वर्षात कु. निखिल नामदेव पाटील, तृतीय वर्ष कला, याने बी. पी. एस. ए. कॉलेज ऑफ फिजिकल एज्युकेशन, भारतीय क्रीडा मंदीर, नायगांव, मुंबई येथे संपन्न झालेल्या आंतरमहाविद्यालयीन कुस्ती स्पर्धेत ७० किलो वजन गटात आमच्या महाविद्यालयास रौप्य पदक प्राप्त करून दिले.

२) मुंबई विद्यापीठ जिमखाना विभाग मुंबई येथे संपन्न झालेल्या आंतरमहाविद्यालयीन महिला ज्युडो स्पर्धेत ४८ किलो वजन गटात कु. भारती जेमलु राठोड, द्वितीय वर्ष वाणिज्य हिने आमच्या महाविद्यालयास रौप्य पदक प्राप्त करून दिले.

३) दिनांक २२ सप्टेंबर २०१४ रोजी नवनिर्माण कॉलेज ऑफ ए. एस. सी. मिरजोळे, जिल्हा रत्नागिरी येथे संपन्न झालेल्या विद्यापीठ स्तरावरील आंतरमहाविद्यालयीन व्हॉलीबॉल स्पर्धेमध्ये व दिनांक २८ ऑक्टोबर २०१४ रोजी सिनियर कॉलेज पाटपन्हाळे, जिल्हा रत्नागिरी येथे संपन्न झालेल्या विभागीय स्तरावरील आंतरमहाविद्यालयीन कबड्डी स्पर्धेमध्ये महाविद्यालयाच्या संघाने चांगली कामगिरी केली.

❖ आनंदीबाई रावराणे स्मृती चषक

सन २०१४-२०१५ या शैक्षणिक वर्षापासून महाविद्यालय व संस्थेच्या अनुमतीने जिमखाना विभागाने दिनांक ८ डिसेंबर २०१४ रोजी आनंदीबाई रावराणे यांच्या स्मृती दिनानिमित्त आनंदीबाई रावराणे स्मृती चषक यासाठी जिल्हास्तरीय व्हॉलीबॉल स्पर्धेचे आयोजन केले होते. या स्पर्धेमध्ये जिल्ह्यातील आठ महाविद्यालयांनी सहभाग घेतला होता. या व्हॉलीबॉल स्पर्धेचे उद्घाटन मा. श्री. सज्जन विनायक रावराणे, अध्यक्ष, स्थानिक समिती, महाराणा प्रतापसिंह शिक्षण संस्था यांच्या शुभहस्ते झाले. या व्हॉलीबॉल स्पर्धेमध्ये विजेतेपद बॅ. खर्डेकर महाविद्यालय, वेंगुर्ला व उपविजेतेपद आपल्या महाविद्यालयाने पटकावले आहे. मा. श्री. कैलास बर्वे साहेब, पोलिस निरीक्षक, वैभववाडी व मा. श्री. सज्जन विनायक रावराणे यांच्या हस्ते विजेत्या संघाला आनंदीबाई रावराणे स्मृती चषक, रोख रक्कम २०००/- व प्रमाणपत्र व उपविजेत्या संघाला रोख रक्कम १०००/- व प्रमाणपत्र देवून गौरविण्यात आले.

❖ तालुकास्तरीय व्हॉलीबॉल स्पर्धा

नेहरू युवा केंद्र, कुडाळ व भैरी भवानी प्रतिष्ठान आचिर्णे यांच्या संयुक्त विद्यमाने आमच्या महाविद्यालयाच्या मैदानावर दिनांक ७ फेब्रुवारी २०१५ रोजी तालुकास्तरीय व्हॉलीबॉल स्पर्धा आयोजित केली होती. या स्पर्धेमध्ये आमच्या महाविद्यालयाच्या संघाने विजेतेपद प्राप्त केले. महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. सी.एस. काकडे यांच्या हस्ते विजेत्या संघाला चषक व रोख रक्कम २०००/- व उपविजेत्या संघाला रोख रक्कम १५००/- बक्षिस देवून गौरविण्यात आले.

❖ युवा हेमंत वार्षिक क्रीडा स्पर्धा

आनंदीबाई रावराणे कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालयाच्या जिमखाना विभागाच्या वतीने सन २०१४-१५ या शैक्षणिक वर्षामध्ये युवा हेमंत





वार्षिक क्रीडा स्पर्धा दिनांक २० जानेवारी २०१५ ते २४ जानेवारी २०१५ या कालावधीत संपन्न झाल्या.

युवा हेमंत वार्षिक क्रीडा स्पर्धेची सुरुवात मुलांच्या व्हॉलीबॉल स्पर्धेनी व मुलींच्या हाफ पीच क्रिकेट स्पर्धांनी झाली. व्हॉलीबॉल स्पर्धेचे उद्घाटन मा. श्री. सज्जन विनायक रावराणे, अध्यक्ष, स्थानिक समिती, महाराणा प्रतापसिंह शिक्षण संस्था यांच्या शुभहस्ते झाले. मुलींच्या हाफ पीच क्रिकेट स्पर्धेचे उद्घाटन मा. श्री. प्रमोदजी रावराणे, सदस्य, स्थानिक समिती, महाराणा प्रतापसिंह शिक्षण संस्था यांच्या शुभहस्ते झाले.

युवा हेमंत वार्षिक क्रीडा स्पर्धा प्रकारामध्ये १०० मी. धावणे, २०० मी. धावणे, ४०० मी. धावणे, लांब उडी, उंच उडी, थाळीफेक, गोळाफेक, भालाफेक, बॅडमिंटन (मुली), दोरी उडी इत्यादी वैयक्तिक मैदानी स्पर्धा, टेबल टेनिस, कॅरम, बुद्धिबळ इत्यादी वैयक्तिक अंतर्गत स्पर्धा व व्हॉलीबॉल, क्रिकेट, हाफ पीच क्रिकेट, कबड्डी, लंगडी इत्यादी सांघिक स्पर्धा घेण्यात आल्या. या विविध क्रीडा स्पर्धेमध्ये यश संपादन केलेल्या खेळाडू विद्यार्थ्यांचे गुणगौरव करण्यासाठी दिनांक ३० जानेवारी २०१५ रोजी वार्षिक पारितोषिक वितरण समारंभ संपन्न झाला.

२३ व्या वार्षिक पारितोषिक वितरण समारंभाचे प्रमुख पाहुणे मा. प्राचार्य डॉ. एस. वाय. होणगेकर, राजे रामराव महाविद्यालय, जत (सांगली), कार्यक्रमाचे अध्यक्ष मा. श्री. रघुनाथ फत्तेसिंग रावराणे, कार्याध्यक्ष, महाराणा प्रतापसिंह शिक्षण संस्था, मुंबई, मा. श्री. अर्जुन बाबुराव रावराणे, कोषाध्यक्ष, महाराणा प्रतापसिंह शिक्षण संस्था, मुंबई, मा. श्री. प्रभानंद शंकर रावराणे, सदस्य, महाराणा प्रतापसिंह शिक्षण संस्था, मुंबई, मा. श्री. यशवंत पांडूरंग रावराणे, सदस्य, महाराणा प्रतापसिंह शिक्षण संस्था, मुंबई, मा. श्री. सज्जन विनायक रावराणे, अध्यक्ष, स्थानिक समिती, महाराणा प्रतापसिंह शिक्षण संस्था, मुंबई, मा. श्री. प्रमोदजी रावराणे, सदस्य, स्थानिक समिती, महाराणा प्रतापसिंह शिक्षण संस्था, मुंबई, ग्रामस्थ, पत्रकार, प्राचार्य या सर्वांच्या उपस्थितीने स्पर्धेतील विजेत्या खेळाडूंना प्रमाणपत्र, ट्रॉफी

आणि रोख बक्षिस देवून गौरविण्यात आले. युवा हेमंत वार्षिक क्रीडा स्पर्धेचा निकाल पुढीलप्रमाणे :-

वैयक्तिक खेळ

| ☆ | कला शाखा :- |
|-----|---|
| अ) | प्रथम वर्ष कला |
| १. | कु. अंकिता अनंत कोलते २०० मि. धावणे प्रथम क्रमांक उंच उडी प्रथम क्रमांक लांब उडी प्रथम क्रमांक भाला फेक प्रथम क्रमांक |
| २. | कु. गणेश भास्कर पाष्टे उंच उडी द्वितीय क्रमांक लांब उडी द्वितीय क्रमांक भाला फेक तृतीय क्रमांक |
| ३. | कु. प्रथमेश प्र. मांजरेकर गोळा फेक तृतीय क्रमांक |
| ४. | कु. उमेश मधुकर हेळेकर ४०० मि. धावणे द्वितीय क्रमांक |
| ५. | कु. विभावरी प्रताप रावराणे ४०० मि. धावणे द्वितीय क्रमांक |
| ६. | कु. स्वाती संजय नारकर ४०० मि. धावणे प्रथम क्रमांक |
| ब) | द्वितीय वर्ष कला |
| १. | कु. निकिता प्रकाश दळवी दोरी उडी प्रथम क्रमांक उंच उडी तृतीय क्रमांक |
| २. | कु. प्राजक्ता वामन साळुंखे गोळा फेक तृतीय क्रमांक |
| ३. | कु. संतोष दीपक सुर्वे थाळी फेक प्रथम क्रमांक |